International Journal of Applied Research 2017; 3(5): 396-397

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(5): 396-397
www.allresearchjournal.com
Received: 16-04-2017
Accepted: 17-05-2017

पवन कुमार
गांव भोडिया खेड़ा जिला
फतेहाबाद, हरियाणा, भारत

Correspondence
पवन कुमार
गांव भोडिया खेड़ा जिला
फतेहाबाद, हरियाणा, भारत

हरियाणा में रचित नाथ–सिद्ध साहित्य में गुरु–महिमा का वर्णन

पवन कुमार

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति परंपरा में सतों की वाणियों में प्राचीन परंपराओं का काफी प्रभाव पड़ा है। भारत की आध्यात्मिक विचार परंपरा ने इस युग में प्रत्यक्ष सात्मसाक्षात्कार किया था। समस्त चराचर के प्रति करूणा, समदृश्टि, विवके व दीन दुखियों के प्रति उत्थान का प्रयास सतों ने किया है। हरियाणा प्रदेष के संतों पर नाथ–सिद्ध साहित्य का प्रभाव स्पश्ट परिलक्षित होता है। गुरू गोरखनाथ ने अपने असामान्य व्यक्तित्व, प्रचार विचारों तथा उदात जीवन पद्धति, की अमिट छाप समस्त मध्ययुगीन परिवेष पर डाली थी जिससे पष्चिमोत्तर भारत भी अछूता नहीं रह रहा था। [1] गुरू गोरखनाथ का जन्म पेषावर के निकट माना जाात है, इस कारण भी यह क्षेत्र इन से अधिक प्रभावित रहा है। पेषावर, स्यालकोट, बन्नू, कोहाट, गोरखटिल्ला, लाहौर, हिंगजाल, हजास, (आज के पाकिस्तान में) अमृतसर, अबोहर, दीनानगर, सरहिंद, पटियाला, लुधियाना, नाभा, कपूरथला, गुरदासपुर, जालधंर (पंजाब में) कांगड़ा, ज्वालामुखी, पालमपुर, बैजनाथ (हिमाचल में) तथा हरियाणा राज्य के अस्थलबोहर, लाडवा, पेहवा, कुरुक्षेत्र, करनाल, जींद, तोषाम, सोनीपत, नरवाना आदि स्थानों पर स्थापित नाम तीर्थ सिद्ध करते हैं कि देष का यह भू–भाग नाथ सिद्ध परंपरा से बहुत प्रभावित एवं प्रेरित रहा है। [2] हरियाणा में गुरू गोरखनाथ के योगमार्ग को पुश्ट करने में सिद्ध चौरंगीनाथ [3] का विषिश्ट योगदान है। इन्होंने अस्थल बोहर मठ की स्थापना की थी। [4] तिब्बती परंपरा के अनुसार चौरंगीनाथ गोरखनाथ के गुरू भाई थी, किंतु पंजाब तथा हरियाणा के प्रचलित लोक–कथाओं के अनुसार इन्हें पूरनभगत के नाम से भी स्मरण किया जाता है।

सिद्ध चौरंगीनाथ के साथ अनेक जनश्रुतियां जुड़ी हुई हैं। रोहतक जिले के प्रीचन गजेटियन तथा योगी संप्रदायवाविश्कृति के अनुसार अस्थल बोहर में ही महासिद्ध चौरंगीनाथ ने अपनी षिश्य परंपरा स्थापित की थी तथ एक बंजारे ने उनसे अनुमति लेकर यहीं एक मंदिर की स्थापना की थी। यह प्राचीन मंदिर अब भी अस्थल बोहर मठ परिसर में विद्यमान है तथा महासिद्ध चौरंगीनाथ की स्मृति में यहां पावन अखंड ज्योति निरंतर प्रज्ज्वलित होती रहती है। बाद में सिद्धबाबा मस्तनाथ जी ने अस्थल बोहर मठ का जीर्णोद्वार किया था। [5]

अस्थल बोहर मठ की गुरू परंपरा इस प्रकार प्राप्त होती है, स्थापना सिद्ध चौरंगीनाथ जीर्णोद्वार सिद्धबाबा मस्तनाथ, सिद्धयोगीराज तोतानाथ, सिद्धयोगीराज मेघनाथ, सिद्धयोगीराज मोहरनाथ, सिद्धयोगीराज चेतनाथ, सिद्धयोगीराज पूर्णनाथ, सिद्धयोगीराज श्रेयोनाथ, सिद्धयोगीराज चांदनाथ। [6]

सिद्ध चौरंगीनाथ द्वारा रचित चार रचनाएं प्राणसांकली, श्रीनाथ अश्टक कुछ सबदियां तथा तत्वभावेनोपदेष प्राप्त होती है। [7] इनमें से प्रमुख रचना प्राणसांकली है।

'प्राणसांकली' का अर्थ प्राणों की रक्षा करने वाली वह श्रृंख्ला है जिसका ज्ञान पिंड से होता है। इस ज्ञान से बाह्य और आंतरिक समस्त भ्रांतियां नश्ट हो जाती है। इसका मूल सिद्धांत यह है कि जो बाह्यखंड में है, वही पिंड में है। इसकी सिद्धि के लिए इस षरीर में त्रिभुवन, चतुदर्ष, लोक, दसवायु, त्रिवेणी, अश्टगिरी, सपतसरिता, सप्तसागर, रातदिन, पंचतीर्थ, पंचभूत, पच्चीस, प्रकृति, चारखानि, विभिन्न नदियां, सप्तवार, नवग्रह, सत्ताइस नक्षत्र, चार वेद, चार युग, विभिन्न चक्रों, दो पक्षों आदि का निवास होता है। [8] इस प्रकार प्राण सोकली में पिंड अथवा षरीर षरीर एवं प्राण का विचार किया गया है। यह विचार मंथन षरीर को नियंत्रण में करने के लिए किया गया है। इस मानव षरीर में सप्तनदियों की कल्पना करते हुए वे कहते हैंः–

> गंगा जमुना सरस्वती नरबदा गोदावरी देवनदी गोमती एते
> सरीरे सपत सलता बसै। जिभ्या दण्शण पासैं गंगा बसै,
> जिभ्या बामैं जमुना बसैं, मध्य जिभ्या सरस्वती बसै,
> पवन नाड़ी नरबदा बसै। अनि नाड़ी गोदावरी बसै,

मेरे मध्ये देव नदी बसै, मूत्र नाड़ी गोमती बसै,
इति सरीरे मध्ये सप्त सलिता बसै। [9]

'प्राण सांकली' में उन्होंने पराया दुख अपना समझने की बात कही है। यथा–

आपणा रे दूश जाणो पर दूश। [10]

सोच समझकर बोलने, गुरू महिमा का वर्णन भी उन्होंने किया है। यथाः–

बोलीयै सर्वधर्म व्यापाकर कारक तत्र ध्यान बंध
अकोचने सर्व कर्म निवर्त होई। [11]
अप्रमाण ले जीवन उपाया, सति वदंत चौरंगीनाथ,
बिन गुरू उपदेसे लख्यान न जाई, त्रिभवने अगोचर,
गुरू ब्रह्मा जानि, सिध संकेत ऊंचभूबसि। [12]

श्री नाथाश्टक में चौंरगीनाथ ने गुरूओं की वंदना की है तथा तत्व–भावनोपदेष में उपदेषात्मक रचनाएं हैं। इनके द्वारा रचित चार सबदियां भी प्राप्त होती हैं, जिनमें मन साधना द्वारा आवागमन के बंधनों से मुक्त का उपदेष दिया गया है। प्राणसांकली के संप्रेशण से चौरंगीनाथ ने सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर मोक्ष प्रज्ञप्त करने का मार्ग भी बतलाया है। उनकी अवमाननना है कि सांकली षरीर विचार [13] है। जो व्यक्ति सांसारिक भ्रमों के बंधनों से मुक्त हो सकता है, वही मोक्ष भी प्राप्त कर सकता है, जो गुरू कृपा से ही संभव है।

नाथ संप्रदाय में हठयोग पर आधारित साधना–पद्धति का प्रचलन है। इसका मूल रूप योगदर्षन में निहित माना जाता है। हठयोग में चित्त को सांसारिक इच्छाओं से विलग कर अंतर्मुखी बनाया जाता है। उन्होंने चार वेदों की कल्पना मानव षरीर में की है। यथा– 'नाभि ऋग्वेद, हृदय यजुर्वेद, कंठ सामवेद और मूर्श अथर्ववेद बोलियै'। गोरखनाथ ने इसका प्रयोग द्वैताद्वैत विलक्षण तत्व, ब्रह्मरंध्र एवं समाधि की अवस्था के अर्थ में भी किया गया है। नाथों न निरंजन, निराकर, परब्रह्म पर अधिक बल दिया है।

हरियाणा का लोक–जीवन भी नाथ–सिद्धों से काफी प्रभावित रहा है। हरियणा के गांव–गांव में प्रचलित गूगापीर [14] के गीत एवं कहानी, खिचड़ी पर्व की महिमा, स्थान–स्थान पर नाथ सिद्धों के डेरे आदि हरियाणावासियों की श्रद्धा को ही व्यक्त करता है। हरियाण के लोक–गीतों में भी नाथ–साहित्य में प्रचलित प्रतीकात्मक षब्दावली के संप्रेशण से योग और ज्ञान का उपदेष दिया गया है। यथाः–

कित रम गया जोगी मंठी सून, जोगी करैं मंठी की रकसा।
मांग खुआवे उस नै भिकसा, कूण करेगा वा की परिकसा।
जलगी लकड़ी बुझी धूणी, कित रमग्या जोगी मंठी सूनी।
बातर कोठड़ी गुपत सिंघासण, जां रहता जोगी का आसण।
ठाली नै सब तूंबे बासण, हे जी डिग ग्या मंदर बिना धूणी।
कित रम ग्या जोगी मंठी सूनी। [15]

नाथ एवं सिद्धों की गूढोक्तियां लोकगीतों में परिलक्षित होती है। यथाः–

मेरी तेरी कोन्या बणै रे मन ऊत
कहूं सीधा तैं चालै आडा याहे बात कसूत।
तेरे संग मैं पांच भूतणी, कोन्या मानै रांड ऊतणी।
तैं पक्का सै भूत। [16]

प्रातः उठकर प्रभु स्मरण व रात्रि को सोते समय हरियाणा के लोग नाथों को स्मरण करते हैं, ताकि आत्मिक षांति मिल सके। यथा–

धरती करया बिछावना, अंबर करया गलेफ।
सोवैं राजा भरतरी, चौकी, पहरे अलेख। [17]

जन्माश्टमी से अगले दिन गूगानवमी का पर्व हरियाणा में बड़ी धूम–धाम से मनाया जाता है। हिंदू इसे गूगाबीर, गूगावीर, गुरू गुग्गा कहकर इसकी पूजा करते हैं। जब गूगापीर माता की भर्त्सना पर समाधि ले लेता है। इसी अवसर पर एक गीत हरियाणा में काफी प्रचलन में हैः–

लीला घोड़ा गोरा गाबरू धरती में गया समाय,
जा राणा एक बर घर आ।
धरती माता लेख मांगे के हिंदू के मुसलमान,
जा राणा एक बर घर आ।
आज लग तो मेरा हिंदू जन्म था आज हुआ मुसलमान,
जा राणा एक बर घर आ।
परसा मे मेरा बाबल जिखै कित गया बैठनहार,
जा राणा एक बर घर आ। [18]

गूगापीर का नाथ पंथी योगी है। यह हरियाणा का प्रसिद्ध देवता है। उसकी प्रसिद्धि एक स्थान पर इस प्रकार व्यक्त हुई है–

गूगा मरग्या सतम
गुजरग्या बागड़ पड़ग्या सोग

इस प्रकार हरियाणा के लोक–साहित्य पर नाथ–सिद्धों ने अपना प्रभाव छोड़ा है और यह प्रभाव आम जतना की षुद्ध आत्मिक हृदय के उद्गार रूप में प्रकट हुआ है।

संधर्व सूची

1. सिंहल, षषिभूशण, (सं0) हिंदी साहित्य को हरियाणा का योगदान, पृ0 26
2. वही, पृ0 26, 27
3. जुनेजा, वेदप्रकाष, नाथ संप्रदायः3 साधना साहित्य एवं सिद्धांत, पृ0 63.64
4. अस्थल बोहर मठ का संक्षिप्त इतिहास, पृत्र 16–21
5. अस्थल बोहर मठ का संक्षिप्त इतिहास, पृ0 10–25
6. जुनेजा, वेदप्रकाष, नाथ संप्रदायः साधना, साहित्य एवं सिद्धांत, पृ0 315
7. वही, पृत्र 115–116
8. सिंहल, षषिभूशण (सं0) हिंदी साहित्य को हरियाणा का योगदान, पृ0 29
9. चौरंगीनाथ प्राण सांकली, पृ0 1–2
10. वही, पृ0 18
11. वही, पृ0 109
12. वही, पृ0 116–118
13. सिंहल, षषिभूशण (सं0) हिंदी साहित्य को हरियाणा का योगदान, पृ0 29–30
14. षारदा, साधुराम, हरियाणा के लोकगीत, पृ0 328–330
15. वही, पृ0 328–330
16. वही, पृ0246
17. सिंहल, षषिभूशण (सं0) हिंदी साहित्य को हरियाणा का योगदान, पृ0 33
18. यादव षंकरलाल, हरियाणा प्रदेष का लोक–साहित्य, पृ0 236